International Journal Of Multidisciplinary Research In Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 3, Issue 1, January 2020 |

तुलसी साहित्य में युग बोध

Dr. Rita Pandey

Associate Professor, Dept. of Hindi, V.S.S.D. College, Kanpur, Uttar Pradesh, India

सारांश

मध्यकालीन भारतवर्ष में सामन्तवाद के पतन के साथ-साथ हिंदू धर्म में भी जकड़बंदी, सड़ांध, गतिरोध और दुर्निवार बुराइयों के लक्षण प्रकट हो रहे थे। पुराने व्यवस्था के पंडितों ने वेद-वेदांत, पुराण, स्मृति और धर्मशास्त्र के नये-नये भाष्य प्रस्तुत कर मरणोन्मुख व्यवस्था को पुनजीवित करने और बचाने का प्रयास किया। जाति प्रथा, वर्णाश्रम व्यवस्था, यज्ञ विधान आदि को नए सिरे से अनुमोदित करने के पीछे तुर्क, अफगान, मुगल, पठान आदि विदेशी आक्रमणकारियों और उनके धार्मिक-सामाजिक विचारों से रक्षा के प्रयासों ने वैदिक-पौराणिक संस्कृति की पुनः प्रतिष्ठा की प्रवृत्ति को नये सिरे से मजबूत कर दिया। सामंती शासक वर्ग ने अपने हितों को धार्मिक जामे में पेश करना आवश्यक समझा और मुगल शासकों ने भी धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति से इस प्रवृत्ति को अपना समर्थन प्रदान किया।

तुलसीदास की विचार-व्यवस्था और उनकी राजनीतिक चेतना उल्लिखित प्रतृत्ति के अनिवार्य अंग के रूप में विकसित हुई थी। कहना न होगा कि जनसाधारण पर ढाये जा रहे जुल्म, उनकी दुरवस्था, दरिद्रता तथा भूखे-नंगे लोगों की चीख-चीत्कार का वर्णन उन्होने पूरी मार्मिकता और करूणा के साथ किया है। यहाँ तक कि महामारी, अकाल, गरीबी आदि की तत्कालीन वास्तविकता पूरी प्रखरता के साथ अंकित हो गई है। धार्मिक पाखंड, आडम्बर, झूठ, मक्कारी, अनैतिकता आदि का पर्दाफाश करने में भी गोस्वामी जी ने अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी है। पर अपने युग के सामाजिक-राजनीतिक संकट का हल प्रस्तुत करने में वे वैदिक-पौराणिक संस्कृति के ढाँचे से बाहर निकल ही नही पाते। उनके पास एक ही हल है - भक्ति, राम की भक्ति। उनका तर्क है कि राम गरीबनेवाज है, दीन दयालु है और शारणागत की रक्षा करने वाले भक्त-वत्सल और उद्धारक है। तुलसी वर्तमान यथार्थ के संकट का एक अतीतोन्मुख समाधान प्रस्तुत करने में राम कथा के सभी चरित्रों और उपाख्यानों का आदर्शीकरण करते हैं। गोस्वामी तुलसीदास के संपूर्ण कृतित्व के अंदर इस असंगति से उत्पन्न द्वन्द्व और तनाव की गूँज-अनुगूंज सुनी जा सकती है।

परिचय

तुलसीदास ने एक ओर तो तत्कालीन परिस्थितियों का विशद निरूपण किया तो दूसरी ओर रामराज्य की परिकल्पना करते हुए आदर्श शासन व्यवस्था का प्रारूप प्रस्तुत किया। वे कहते हैं:

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज काहू नहिं व्यापा।।

सब नर करहिं परसपर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत सुति नीती।।

सभी लोग परस्पर प्रेम से जीवन निर्वाह करते हैं तथा कोई किसी के प्रति शत्रु भाव नहीं रखता। तुलसी ने जिस राम राज्य की रूपरेखा यहां प्रस्तुत की है उसमें सुख का आधार भौतिक समृद्धि न होकर आध्यात्मिक भावना है। राम मानवता के चरम आदर्श हैं उनका चरित्र अनुकरणीय है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 3, Issue 1, January 2020 |

तुलसी कहते हैं कि राम के राज्य में कोई किसी से बैर नहीं करता तथा राम के प्रभाव से विषमता नष्ट हो गई थीः

बयरु न करु काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई।।[1,2]

सभी लोग वर्णाश्रम धर्म का पालन करते थे और वेदविहित मार्ग पर चलकर प्रेम सहित जीवन व्यतीत करते थे। उस समय धर्म अपने चारों चरणों सत्य, शौच, दया, दान सहित प्रतिष्ठित था, पापकर्म विलुप्त हो गए थे, कोई भी व्यक्ति स्वप्न में भी पाप नहीं करता था। सभी व्यक्ति राम की भक्ति में लीन होकर स्वर्ग के अधिकारी वन गए थेः

बरनाश्रम निज निज धरम निरत वेद पथ लोग।

चलहिं सदा पावहिं सुखहिं नहिं भय सोक न रोग।।

कोई भी अल्पमृत्यु प्राप्त नहीं करता था, सभी सुन्दर और नीरोग थे। कोई दरिद्र, मूर्ख एवं लक्षणों से हीन नहीं था। सभी लोग दंभ रहित होकर धर्म पालन में लगे रहते थे। राम के राज्य में सभी नर-नारी उदार थे, परोपकारी थे और द्विजों के सेवक थे। स्त्रियां भी मन, वचन और कर्म से पति का हितचिन्तन करती थीं:

सब उदार सब पर उपकारी। बिप्र चरन सेवक नर नारी।

एक नारि व्रत रत सब झारी। ते मन बच क्रम पति हितकारी।।

रामचन्द्र के राज में अपराध कोई नहीं करता था इसीलिए 'दण्ड' की आवश्यकता ही न पड़ती थी। 'जीतना' शब्द केवल मन के लिए सुनाई पड़ता था अर्थात् लोग मन पर विजय पाने के लिए ही प्रयास करते थे अन्यथा 'जीतने' की इच्छा समाप्त हो चुकी थी।

रामराज्य पूर्णतः सुव्यवस्थित था। वनों में वृक्ष सदा फूलते-फलते हैं, हाथी और सिंह वैरभाव भूलकर एक साथ रहते थे। पशु-पक्षी सहज वैर को भी भूलकर आपस में पारस्परिक प्रेम भाव विकसित कर रहते थेः

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन। रहहि एक संग गज पंचानन।

खग मृग सहज बयरु बिसराई। सबन्हिं परसपर प्रीति बढ़ाई।।

रामचन्द्र के राज्य में सब अपनी-अपनी मर्यादा में रहते हैं। तालाब कमलों से परिपूर्ण हैं, चन्द्रमा अपनी शीतल किरणों से पृथ्वी को भर रहा है तो सूर्य उतना ही तप्त होता है, जितनी आवश्यकता है। मेघ मांगने से जल देते हैः

बिधु महि पूर मयूखन्हि, रवि तप जेतनेहिं काज।

मांगे वारिद देहिं जल, रामचन्द्र के राज।।[3,4]

तुलसी ने रामराज्य की कल्पना करते हुए राजा के लिए कुछ गुणों का उल्लेख किया है। यथा- लोक वेद द्वारा विहित नीति पर चलना, धर्मशील होना, प्रजापालक होना, सज्जन एवं उदार होना, स्वभाव का दृढ़ होना, दानशील होना आदि। राम में आदर्श राजा के सभी गुण विद्यमान हैं। राम को अपनी प्रजा प्राणों से भी अधिक प्रिय है तो प्रजा को अपने राजा राम प्राणों से अधिक प्रिय हैं। प्रियजन, पुरजन, परिजन, गुरुजन सबके प्रति राम का व्यवहार आदर्श एवं धर्म के अनुकूल है। ऐसे रामराज्य में विषमता टिक नहीं सकती और सभी प्रकार के दुखों से प्रजा को त्राण मिल जाता है। तुलसी ने रामराज्य का प्रारूप प्रस्तुत करते हुए एक आदर्श राज्य की परिकल्पना की है। वर्तमान काल में गांधीजी ने जिस रामराज्य की कल्पना की है, उसका मूल आधार भी तुलसी की रामराज्य परिकल्पना ही है। निश्चय ही यह एक आदर्श शासन व्यवस्था हैं जिसका मूल आधार लोकहित एवं मानववाद है।

विचार – विमर्श

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 3, Issue 1, January 2020 |

अपने युग के यथार्थ पीड़ामय संसार के साक्षात गवाह होने के चलते तुलसी राम के भरोसे और उनकी मर्यादा की बैसाखी के सहारे समन्वय का सहारा लेते हैं। तब प्रजातंत्र नहीं था और अब घोषित राजतंत्र नहीं है। महात्मा बुद्ध के बाद भारत के सबसे बड़े लोकनायक तुलसीदास शुमार किए जाते हैं।

सोलहवीं शताब्दी में गोस्वामी तुलसीदास ने जिस आरत भारत को निहारा था उसकी तस्वीर अब बड़ी साफ हो गई है। अपने अभाव अपनी दरिद्रता और दारुण अवस्था का जो चित्र उन्होंने प्रस्तुत किया है वह जन साधारण की अकिंचनता और बदहाली के अंकन के क्रम में खींचे गए चित्रों के अल्बम का ही एक हिस्सा है। शासक वर्ग की सुचिंतित नीति के तहत जन-शिक्षा के अभाव का हवाला देते हुए बर्नियर ने अपने यात्रा वृत्तांत में कहा था कि यह युग हिंदुस्तान के जनसाधारण की गहन और सार्वत्रिक अज्ञानता का था। और लोगों को अकाल-दुष्काल से भयंकर भुखमरी का सामना करना पड़ा।

अतिवृष्टि-अनावृष्टि ही नहीं चुल्लू भर जल और भर चने तक को लोग तरस रहे थे। भोजन का प्रश्न भारी पहाड़ जैसा। थोड़ा नजर घुमाइए यह श्वेत-श्याम चित्र इस सदी में जरा रंगीन हुआ है शेष सब वैसा ही। जनमुखापेक्षी व्यवस्था पहले तो दाल, चावल, आटा, तेल, दूध आलू, प्याज इनकी पहुँच से दूर करटी है फिर इनके पीले-लाल कार्ड बनाकर जमीर को लाचारी-भिखमंगई में तब्दील करती है। इन योजनाओं के बड़े सुंदर नाम हैं! महँगाई,अभाव, बेकारी और असुरक्षा बोध ने बिललाते जनों पर तमाम ऐबों की तोहमत लगा दी है। [5,6]

अपने युग के यथार्थ पीड़ामय संसार के साक्षात गवाह होने के चलते तुलसी राम के भरोसे और उनकी मर्यादा की बैसाखी के सहारे समन्वय का सहारा लेते हैं। तब प्रजातंत्र नहीं था और अब घोषित राजतंत्र नहीं है। महात्मा बुद्ध के बाद भारत के सबसे बड़े लोकनायक तुलसीदास शुमार किए जाते हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार-लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके। क्योंकि भारतीय जनता में नाना प्रकार की परस्पर विरोधिनी संस्कृतियाँ, साधनाएँ, जातियाँ, आचारनिष्ठा और विचार-पद्धतियाँ प्रचलित हैं। लोकनायक उस महान व्यक्ति को कहा जा सकता है जो समाज के मनोविज्ञान को समझकर प्राचीनता का संस्कार करके नवीन दृष्टिकोण से उसमें उचित सुधार करके जातिगत संस्कृति का उत्थान करता हो। उस युग के संदर्भ में यह कहना सर्वथा उचित होगा कि गोस्वामी तुलसीदास की वाणी की पहुँच मानव-हृदय के समस्त भावों एवं मानव-जीवन के समस्त व्यवहारों तक दिखाई देती है। उनके काव्य में युग-बोध पूर्णरूपेण मुखरित हुआ है।

तत्कालीन संस्कृतियों, जातियों, धर्मावलंबियों के बीच समन्वय स्थापित करके दिशाहीन समाज को नई दिशा प्रदान की। समन्वय का यह भाव उनकी अनुभूति एवं अभिव्यक्ति में भी झलकता है। उनके यहाँ लोकसंग्रह की भावना अविच्छिन्न रूप से व्याप्त है। इसके जरिए तुलसी ने 'सत्यं शिवं सुन्दरं' को साकार किया है। कवि की भाषा की सहजता, सरलता और उत्कट सम्प्रेषणीयता मानवमूल्यों को जोड़ती है। उन्हें बुद्ध के बाद लोगों को संघटित करने वाला सबसे बड़ा संत माना जाता है। तुलसी अपनी समन्वय-साधना के कारण उस युग के लोकनायक थे।[9]

तुलसीदास में वह प्रगतिशीलता विद्यमान थी, जिससे वे परिस्थितियों के अनुकूल नवीन दृष्टिकोण अपना कर प्राचीनता का संस्कार कर सकें। वह व्यक्तिगत स्तर पर वैषम्य की पीड़ा से भली-भाँति परिचित थे। उनकी दृष्टि समाज, राजनीति, धर्म, दर्शन, सम्प्रदाय और यहाँ तक कि साहित्य में व्याप्त वैषम्य, असमानता, अलगाव, विछिन्नता, द्वेष और स्वार्थपरता की जड़ों को गहराई से नाप चुकी थी और उनके भीतर छिपी एक सर्जक की संवेदनशीलता यह भाँप चुकी थी कि वैषम्य और विछिन्नता के उस युग में लोकमंगल केवल सामंजस्य और समन्वय के लेप से ही संभव है। समन्वय से ही उन गहरी खाइयों को पाटा जा सकता था जो मनुष्य को मनुष्य से अलग, तुच्छ और अस्पृश्य बना रही थी।

इस देश-समाज में न्याय और समता का लक्ष्य कैसे हासिल होगा, मानवता की आस्था की रक्षा कैसे होगी? ऐसे अनेक प्रश्न जीवन की चिंता से अनुस्यूत हैं तथा मनुष्यता की रक्षा हेतु अनिवार्य भी। सामाजिक व्यवस्था के तार छिन्न-भिन्न हो रहे हैं और जब मुँह में जबान न रह गई हो ऐसी विषम परिस्थितियों में बाबा तुलसी की लोकपरक दृष्टि एवं समन्वयवादी विचारधारा मानवजाति को मानसिक एवं आत्मिक शन्ति तो प्रदान कर ही सकती है।[7,8]

परिणाम

गोस्वामी तुलसीदास न केवल हिन्दी के वरन् उत्तर भारत के सर्वश्रेष्ठ कवि एवं विचारक माने जा सकते हैं। महाकवि अपने युग का ज्ञापक एवं निर्माता होता है। इस कथन की पुष्टि गोस्वामी जी की रचनाओं से सवा सोलह आने होती है। जहां संसार के अन्य कवियों ने साधु-महात्माओं के सिद्धांतों पर आसीन होकर अपनी कठोर साधना या तीक्ष्ण अनुभूति तथा घोर धार्मिक कट्टरता या सांप्रदायिक असहिष्णुता से भरे बिखरे छंद कहे हैं और अखंड ज्योति की कौंध में कुछ रहस्यमय, धुंधली और अस्फुट रेखाएं अंकित की हैं अथवा लोक-मर्मज्ञ की हैसियत से सांसारिक जीवन के तप्त या शीतल एकांत चित्र खींचे हैं, जो धर्म एवं अध्यात्म से सर्वथा उदासीन दिखाई देते हैं, वहीं गोस्वामीजी ही ऐसे कवि हैं, जिन्होंने इन सभी के नानाविध भावों को एक सूत्र में गुफित करके अपना अनुपमेय साहित्यिक उपहार प्रदान किया है।[10]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 3, Issue 1, January 2020 |

काव्य प्रतिभा के विकास-क्रम के आधार पर उनकी कृतियों का वर्गीकरण इसप्रकार हो सकता है - प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी और तृतीय श्रेणी। प्रथम श्रेणी में उनके काव्य-जीवन के प्रभातकाल की वे कृतियां आती हैं जिनमें एक साधारण नवयुवक की रसिकता, सामान्य काव्यरीति का परिचय, सामान्य सांसारिक अनुभव, सामान्य सहृदयता तथा गंभीर आध्यात्मिक विचारों का अभाव मिलता है। इनमें वर्ण्य विषय के साथ अपना तादात्म्य करके स्वानुभूतिमय वर्णन करने की प्रवृत्ति अवश्य वर्तमान है, इसी से प्रारंभिक रचनाएं भी इनके महाकवि होने का आभास देती हैं। इस श्रेणी में रामललानहछू, वैराग्यसंदीपनी, रामाज्ञा-प्रश्न और जानकी-मंगल परिगणनीय हैं।[11]

दूसरी श्रेणी में उन कृतियों को समझना चाहिए जिनमें कवि की लोक-व्यापिनी बुद्धि, उसकी सद्ग्राहिता, उसकी काव्य के सूक्ष्म स्वरुप की पहचान, व्यापक सहृदयता, अनन्य भक्ति और उसके गूढ़ आध्यात्मिक विचार विद्यमान है। इस श्रेणी की कृतियों को हम तुलसी के प्रौढ़ और परिप काव्य-काल की रचनाएं मानते हैं। इसके अंतर्गत रामचरितमानस, पार्वती-मंगल, गीतावली, कृष्ण-गीतावली का समावेश होता है।

अंतिम श्रेणी में उनकी उत्तरकालीन रचनाएं आती हैं। इनमें कवि की प्रौढ़ प्रतिभा ज्यों की त्यों बनी हुई है और कुछ में वह आध्यात्मिक विचारों को प्राधान्य देता हुआ दिखाई पड़ता है। साथ ही वह अपनी अंतिम जरावस्था का संकेत भी करता है तथा अपने पतनोन्मुख युग को चेतावनी भी देता है। विनयपत्रिका, बरवै रामायण, कवितावली, हनुमान बाहुक और दोहावली इसी श्रेणी की कृतियां मानी जा सकती हैं।

उसकी दीनावस्था से द्रवीभूत होकर एक संत-महात्मा ने उसे राम की भक्ति का उपदेश दिया। उस बालक नेबाल्यकाल में ही उस महात्मा की कृपा और गुरु-शिक्षा से विद्या तथा रामभक्ति का अक्षय भंडार प्राप्त कर लिया। इसके पश्चात् साधुओं की मंडली के साथ, उसने देशाटन करके प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त किया।

गोस्वामी जी की साहित्यिक जीवनी के आधार पर कहा जा सकता है कि वे आजन्म वही रामगुण -गायक बने रहे जो वे बाल्यकाल में थे। इस रामगुण गान का सर्वोत्कृष्ट रुप में अभिव्यक्त करने के लिए उन्हें संस्कृत-साहित्य का अगाध पांडित्य प्राप्त करना पड़ा। रामललानहछू, वैराग्य-संदीपनी और रामाज्ञा-प्रश्न इत्यादि रचनाएं उनकी प्रतिभा के प्रभातकाल की सूचना देती हैं। इसके अनंतर उनकी प्रतिभा रामचरितमानस के रचनाकाल तक पूर्ण उत्कर्ष को प्राप्त कर ज्योतिर्मान हो उठी। उनके जीवन का वह व्यावहारिक ज्ञान, उनका वह कला-प्रदर्शन का पांडित्य जो मानस, गीतावली, कवितावली, दोहावली और विनयपत्रिका आदि में परिलक्षित होता है, वह अविकसित काल की रचनाओं में नहीं है।[9,10]

उनके चरित्र की सर्वप्रधान विशेषता है उनकी रामोपासना।

धरम के सेतु जग मंगल के हेतु भूमि ।
भार हरिबो को अवतार लियो नर को ।
नीति और प्रतीत-प्रीति-पाल चालि प्रभु मान,
लोक-वेद राखिबे को पन रघुबर को ।।

(कवितावली, उत्तर, छंद० ११२)

काशी-वासियों के तरह-तरह के उत्पीड़न को सहते हुए भी वे अपने लक्ष्य से भ्रष्ट नहीं हुए। उन्होंने आत्मसम्मान की रक्षा करते हुए अपनी निर्भीकता एवं स्पष्टवादिता का संबल लेकर वे कालांतर में एक सिद्ध साधक का स्थान प्राप्त किया।

गोस्वामी तुलसीदास प्रकृत्या एक क्रांतदर्शी कवि थे। उन्हें युग-द्रष्टा की उपाधि से भी विभूषित किया जाना चाहिए था। उन्होंने तत्कालीन सांस्कृतिक परिवेश को खुली आंखों देखा था और अपनी रचनाओं में स्थान-स्थान पर उसके संबंध में अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त की है। वे सूरदास, नन्ददास आदि कृष्णभक्तों की भांति जन-सामान्य से संबंध-विच्छेद करके एकमात्र आराध्य में ही लौलीन रहने वाले व्यक्ति नहीं कहे जा सकते बल्कि उन्होंने देखा कि तत्कालीन समाज प्राचीन सनातन परंपराओं को भंग करके पतन की ओर बढ़ा जा रहा है। शासकों द्वारा सतत शोषित दुर्भिक्ष की ज्वाला से दग्ध प्रजा की आर्थिक और सामाजिक स्थिति किंकर्त्तव्यविमूढ़ता की स्थिति में पहुंच गई है -

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 3, Issue 1, January 2020 |

खेती न किसान को,
भिखारी को न भीख, बलि,
वनिक को बनिज न,
चाकर को चाकरी ।
जीविका विहीन लोग
सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों
क

निष्कर्ष

हाँ जाई, का करी ।।[12]

समाज के सभी वर्गअपने परंपरागत व्यवसाय को छोड़कर आजीविका-विहीन हो गए हैं। शासकीय शोषण के अतिरिक्त भीषण महामारी, अकाल, दुर्भिक्ष आदि का प्रकोप भी अत्यंत उपद्रवकारी है। काशीवासियों की तत्कालीन समस्या को लेकर यह लिखा -

संकर-सहर-सर, नारि-नर बारि बर,
विकल सकल महामारी मांजामई है ।
उछरत उतरात हहरात मरि जात,
भभरि भगात, थल-जल मीचुमई है ।।

उन्होंने तत्कालीन राजा को चोर और लुटेरा कहा -

गोड़ गँवार नृपाल महि,
यमन महा महिपाल ।
साम न दाम न भेद कलि,
केवल दंड कराल ।।

साधुओं का उत्पीड़न और खलों का उत्कर्ष बड़ा ही विडंबनामूलक था -

वेद धर्म दूरि गये,
भूमि चोर भूप भये,
साधु सीद्यमान,
जान रीति पाप पीन की।

उस समय की सामाजिक अस्त-व्यस्तता का यदि संक्षिप्ततम चित्र -

प्रजा पतित पाखंड पाप रत,
अपने अपने रंग रई है ।
साहिति सत्य सुरीति गई घटि,
बढ़ी कुरीति कपट कलई है।
सीदति साधु, साधुता सोचति,
खल बिलसत हुलसत खलई है ।।

उन्होंने अपनी कृतियों के माध्यम से लोकाराधन, लोकरंजन और लोकसुधार का प्रयास किया और रामलीला का सूत्रपात करके इस दिशा में अपेक्षाकृत और भी ठोस कदम उठाया। गोस्वामी जी का सम्मान उनके जीवन-काल में इतना व्यापक हुआ कि अब्दुर्रहीम खानखाना एवं टोडरमल जैसे अकबरी दरबार के नवरत्न, मधुसूदन सरस्वती जैसे अग्रगण्य शैव साधक, नाभादास जैसे भक्त कवि

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 3, Issue 1, January 2020 |

आदि अनेक समसामयिक विभूतियों ने उनकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की। उनके द्वारा प्रचारित राम और हनुमान की भक्ति भावना का भी व्यापक प्रचार उनके जीवन-काल

में ही हो चुका था।

रामचरितमानस ऐसा महाकाव्य है जिसमें प्रबंध-पटुता की सर्वांगीण कला का पूर्ण परिपाक हुआ है में उन्होंने उपासना और साधना-प्रधान एक से एक बढ़कर विनयपत्रिका के पद रचे और लीला-प्रधान गीतावली तथा कृष्ण-गीतावली के पद। उपासना-प्रधान पदों की जैसी व्यापक रचना तुलसी ने की है, वैसी इस पद्धति क कवि सूरदास ने भी नहीं की।

काव्य-गगन के सूर्य तुलसीदास ने अपने अमर आलोक से हिन्दी साहित्य-लोक को सर्वभावेन देदीप्यमान किया। उन्होंने काव्य के विविध स्वरुपों तथा शैलियों को विशेष प्रोत्साहन देकर भाषा को खूब संवारा और शब्द-शक्तियों, ध्वनियों एवं अलंकारों के यथोचित प्रयोगों के द्वारा अर्थ क्षेत्र का अपूर्व विस्तार भी किया। उनकी साहित्यिक देन भव्य कोटि का काव्य होते हुए भी उच्चकोटि का ऐसा शास्त्र है, जो किसी भी समाज को उन्नयन के लिए आदर्श, मानवता एवं आध्यात्मिकता की त्रिवेणी में अवगाहन करने का सुअवसर देकर उसमें सत्पथ पर चलने की उमंग भरता है।[13]

संदर्भ

1) स्वर्गारोहण - संपूर्ण रामचरितमानस, प्रमुख पात्रों के संदर्भ, MP3 ओडियो तथा PDF डाउनलोड 1988
2) रामचरितमानस (हिन्दी अर्थ के साथ)1965
3) तुलसीदास की रचनाएं 1999
4) कवितावली का मूल पाठ (विकीस्रोत पर) 2000
5) दोहावली का मूल पाठ (विकीस्रोत पर) 2003
6) विनयपत्रिका (विकीस्रोत पर) 1998
7) संकटमोचन हनुमानाष्टक (विकीस्रोत पर) 1997
8) हनुमान बाहुक :हिन्दी भावार्थ सहित 1993
9) हनुमान चालीसा (विकीस्रोत पर) 1876
10) तुलसी सुभाषित - हिन्दी के विकि_सूक्ति (विकिकोट्) पर 1888
11) मानस सुभाषित - हिन्दी के विकि_सूक्ति (विकिकोट्) पर 1884
12) तुलसी काव्य में साहित्यिक अभिप्राय (गूगल पुस्तक ; लेखक - जनार्दन उपाध्याय) 1905
13) गोस्वामी तुलसीदास जी का जीवन परिचय 1999